श्री सभापति : प्रधानमंत्री जी, अब आप अपना उत्तर दे दीजिए ...(**व्यवधान**)... देखिए आपकी बात रह गई । आप लोग प्रधानमंत्री जी की मौज़ूदगी में अपनी grievances रखना चाहते थे । अब इससे ज्यादा आप क्या चाहते है ?

श्री नीलोत्पल बसु : ठीक है, यह आपके और प्रधानमंत्री जी के बीच की बात है ।

श्री सभापति : यह मेरे और प्रधानमंत्री जी के बीच की बात नही है । आप लोगो ने मेरी बात तो मानी नही । आपकी बात प्रधानमंत्री जी ने मानकर आपको अनुमति दी है ।

श्री नीलोत्पल बसु : इसीलिए तो हम insist नही कर रहे है । यह आपके और प्रधानमंत्री जी के बीच की बात है ।

श्री सभापति : प्रधानमंत्री जी, आप बोलिए ।

REPLY TO THE DISCUSSION ON THE STATEMENT BY PRIME MINISTER ON RESIGNATION OF SHRI DILIP SINGH JUDEV

प्रधानमंत्री (**श्री अटल बिहारी वाजपेयी**) : सभापति जी, मैं चर्चा का उत्तर देने के लिए खड़ा हुआ हूं । यह चर्चा एक मंत्री के त्यागपत्र के कारण जो स्थिति पैदा हुई है, उस पर हो रही है । मंत्री ने किन परिस्थितियों में त्यागपत्र दिया, सदन उनसे अवगत है । मैं सदन को बताना चाहता हूं कि अब श्री जूदेव के मामले की स्थिति क्या है । CBI ने फारेंसिक जांच के लिए VCD भेजी है । उसकी रिपोर्ट शीघ्र ही प्राप्त होने की आशा है। इस सारे मामले में एक व्यक्ति का नाम लिया जा रहा है – उसका नाम राहुल है – उसकी अभी तक पहचान नही हो पाई है । श्री जूदेव और रतोडिया को CBI ने दो बार पूछताछ के लिए बुलाया था । इस पूछताछ में अभी तक ऐसी कोई बात सामने नही आई है जिसके कारण FIR दर्ज़ की जा सके । जांच हो रही है । जो VCD है और उसमें जो संवाद निहित हैं, वे स्पष्ट नही है । इसलिए उसके आधार पर कोई मामला बनाना मुश्किल है ...(**व्यवधान**)... सभापति महोदय, जो वस्तुस्थिति है, वह मैंने आपके सामने रख दी है । मैंने इसमें कुछ छिपाया नही है और कुछ मिलाया नही है ।

सी0बी0आई0 को मामला सौंपा गया है । इसके जांच के परिणाम की प्रतीक्षा करनी होगी । हमें चिंता जरूर है कि एक महीने के बाद भी इस मामले से संबंधित सारे तथ्य सामने क्यों नही आ रहे है और इस चिंता से सी0बी0आई0 को अवगत भी करा दिया गया है । सारी चर्चा में एक बात मुझे बहुत खटकी । यह सदन महारथियों का सदन है, दिग्गजों का सदन है, बुजुर्गो का सदन है । इस सदन में अगर कोई ऐसी बात कही जाए जो हमारे संविधान को कमजोर करती है, संवैधानिक मान्यता को कमजोर करती है, तो वह ठीक नही है । सी0बी0आई0 एक प्रमुख जांच एजेंसी है । हम जब प्रतिपक्ष में थे उस पर भरोसा करते थे । फिर प्रतिपक्ष में जाएंगे और जरूरत पडी तो सी0बी0आई0 का हम सम्मान करेंगे, सी0बी0आई0

की जांच को उचित मूल्य देंगे । लेकिन तुलना की गई है जूदेव के केस की जोगी जी के केस से । यह कहा गया है कि डबल स्टेंडर्ड है । एक गज से जूदेव को नापा जा रहा है, दूसरे गज से जोगी जी की नाप-पट्टी हो रही है । मैं इस आरोप का बडी विनम्रता से लेकिन दृढ़ता से खंडन करना चाहता हूं । दोनों मामले अलग है, विषय अलग है । जिस तरह से वे कार्रवाई के लिए सामने आए या जनता के सामने आए उसमें पृथकीकरण है, अलग है । मैं कुछ तथ्य सदन के सामने रखना चाहूंगा । श्री जोगी के मामले में शिकायतकर्ता है । उनका नाम है श्री विरेन्द्र पांडे । जानी-पहचानी मूर्ति है । उन्होंने रायपुर पुलिस स्टेशन में एफ0आई0आर0 दर्ज कराई है । उन्होंने श्री अजीत जोगी, उनके पुत्र अमित जोगी और श्री पी0आर0 खुन्टे के नाम भी दर्ज कराए हैं । इतना ही नही, पांडे ने 45 लाख रूपए की रकम थाने में जमा की है जो उनके अनुसार श्री अजीत जोगी ने उन्हें रिश्वत के रूप में दी है । रिश्वत का मकसद क्या था ? चर्चा हो रही है कि जूदेव ने पैसे लिए । किसलिए लिए ? अभी उद्देश्य स्पष्ट नही है । वह जांच के बाद स्पष्ट होगा । लेकिन जहां तक जूदेव का मामला है वह स्पष्ट है । **...(व्यवधान)...** जूदेव नही जोगी का मामला है । सभापति जी, यह चमड़े की जुबान हैं, कभी-कभी पलट जाती है और एक स्थान पर बोलते हुए यह जुबान मुझे एक बार धोखा दे चुकी है, और मुझे कहना चाहिए था सही और कह दिया गलत । अब उसका दण्ड भुगतना पड़ेगा । रिश्वत का मकसद श्री पांडे ने स्पष्ट तौर पर बताया है और वह मकसद था भारतीय जनता पार्टी के नवनिर्वाचित विधायको को तोड़ कर कांग्रेस के समर्थन से एक अलग सरकार बनाने का । इस मकसद के हवाले से उन्होंने एक दस्तावेज भी प्रस्तुत किया है और वह दस्तावेज श्री अजीत जोगी द्वारा राज्यपाल महोदय को लिखा गया पत्र है और वह स्पष्ट कर चुका है कि यह रुपया किसलिए दिया जा रहा था । पत्र लिखने की बात श्री अजीत जोगी ने भी स्वीकार की है । शायद कांग्रेस पार्टी ने इसी आधार पर उनके खिलाफ कार्रवाई की है । इस तरह श्री अजीत जोगी के दूसरे प्रकरण में, यह दूसरा प्रकरण है, मैं पहले प्रकरण का उल्लेख नही कर रहा हूं । इसमें एक जाली दस्तावेज बनाया गया था और जाली दस्तावेज के आधार पर यह शिकायत की गई थी कि इंटेलीजेंस के अफसर कांग्रेस को बदनाम करने के लिए मनगढ़ंत आरोप लगा रहे है । वह एक मामला अलग है । वह अलग चल रहा है । उसमें भी किसी नये प्रमाण की जरूरत नही है । जो है, वह सबके सामने है, स्पष्ट है । उसमें मेरा भी नाम है । जोगी जी ने पत्र लिखा, मुझको लिखा । क्या आपके इंटेलीजेंस के अफसर कुछ कांग्रेस के नेताओं को गोलमाल करने के लिए कदम उठा रहे है ? मैंने केबिनेट सेक्रेटरी के पास भेज दिया । जांच हुई और जब मैंने उस पत्र को देखा तो मैं समझ गया कि यह जाली पत्र है, नकली पत्र है और बाद में उसी की पुष्टि हुई । अब जोगी जी पर मुकदमा चल रहा है । वह एक अलग कहानी है उसमें मैं जाना नही चाहता ।

मैं दूसरे प्रकरण की बात कर रहा हूं । इस मामले में कई प्रकरण है । घूस के कितने पैसे दिए यह इसमें है । अजीत जोगी जी के दूसरे प्रकरण में शिकायतकर्ता है । शिकायत में साफ नाम लिये हुये हैं । घूस के कितने पैसे किसको और किसने दिये यह भी बताया गया है । घूस का उद्देश्य क्या है ? **...(व्यवधान)...**

श्री मूल चन्द मीणा (राजस्थान) **:** यह जूदेव पर डिसकशन है या अजीत जोगी पर । **...(व्यवधान)...**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उद्देश्य को साफ करता है । **...(व्यवधान)...**

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज) : प्रधानमंत्री जी बता रहे हैं । सबका जवाब दे रहे हैं । **...(व्यवधान)...**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सब दस्तावेज जो श्री अजीत जोगी जी द्वारा राज्यपाल महोदय को लिखा गया पत्र है । **...(व्यवधान)...**

श्री मूल चन्द मीणा : प्रधानमंत्री जी । **...(व्यवधान)...**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : वह पत्र सबके सामने है जैसा मैंने कहा । कांग्रेस पार्टी ने भी उस पत्र पर ध्यान दिया है । इसके विपरीत अब मैं जूदेव के प्रकरण पर आता हूं । यह सचमुच में मेरे लिए आज दुर्भाग्य का दिन है । संसद में खड़े होकर, वरिष्ठो के सदन में मुझे भ्रष्टाचार के ऐसे मामलों का उल्लेख करना पड़ेगा और सफाई देने का काम करना पड़ेगा जो लोकतंत्र के लिए कलंक है । दो-दो व्यक्ति, राजनैतिक नेता, कौन दोषी है, कौन निर्दोष है इसका फैसला अदालत करेगी । मैं कोई फतवा नही दे रहा हूं, मैं कोई निर्णय नही दे रहा हूं । लेकिन दो प्रमुख राजनीतिक नेता, एक मुख्य मंत्री, दूसरे केन्द्र के मंत्री, वे दोंनो आज अफवाहों के लपेटे में खड़े है । देश में इसकी क्या प्रतिक्रिया होगी ? नौजवान इस प्रकरण को किस तरह से लेंगे ? कौन सही है, कौन गलत है, कौन निर्दोष है, कौन दोषी है, यह फैसला तो बाद में होगा । मगर लोकतंत्र के मुँह पर कालिख तो लग गई । यह आरोप लगा कैसे ? **...(व्यवधान)...**

श्री सभापति : आप बैठे रहिए । क्या मतलब है बीच में इंटरेप्शन करने का ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : श्री अजीत जोगी के बारे मे मैं आपको बता चुका हूं । लोग कहते है कि जूदेव के मामले में प्रारंभिक जांच पूरी हो गई और एफ0आई0आर0 दर्ज क्यों नही हुई है और यह कहा गया है कि जोगी के बारे में जल्दी हो गयी क्योंकि जोगी का और जूदेव का प्रकरण अलग-अलग है । दोनों "ज' से जुड़े हुए है, लेकिन दोंनो अलग है । इसलिए उसकी जांच हो रही है । कोई कहेगा कि इन जांचों की जरूरत क्या है ? मगर जांचों की जरूरत है । सीबीआई कहती है कि जरूरत है । हमें कार्यवाही आगे करनी है, मुकदमा जीता जाये, अपराधियों को सजा हो, इसका प्रबंध करना है और इसलिए विलम्ब हो रहा है । लेकिन इसमें दोहरे मापदंड का सवाल नही है । जोगी जी ने जो कुछ किया, सामने किया । उन्होंने कुछ छिपाया नही, पर्दे के पीछे कुछ नही है लेकिन जूदेव का जो काम है, वह अभी पर्दे के पीछे है और उसका पता लगाना पड़ेगा । इसीलिए पता लगाने की बात हो रही है ।

श्री राजू परमार : पूरे देश ने देखा । **...(व्यवधान)...**

SHRI JANARDHANA POOJARY (Karnataka) : Mr. Prime Minister, we have got respect for you. You are losing credibility today... *(Interruptions)...*

श्री सभापति : माननीय सदस्य, डिसटर्ब नही करें । ...(**व्यवधान**)... माननीय सदस्य, कृपया बैठिए ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : क्या हम सीबीआई को जांच करने के लिए समय नही दें ? क्या सीबीआई को आदेश दे दिया जाए – प्रधानमंत्री के कार्यालय से, सचिवालय से – कि गिरफ्तार कर लो, और एक की गिरफ्तारी से काम नही चलेगा, दूसरे को भी गिरफ्तार कर लो । यह अंधेर नगरी नही है, यहां न्याय होता है, यह लोकतंत्र है । ...(**व्यवधान**)... मैंने कहा कि देरी से मुझे भी चिंता हो रही है लेकिन जांच हो रही है और मैं उम्मीद करता हूं कि सच्चाई सामने आएगी । लेकिन मैं फिर उसी प्रश्न को उठाना चाहता हूं जो प्रश्न मेरे हृदय को बार बार कुरेद रहा है कि इस देश में हो क्या रहा है ? हम किधर जा रहे है ? मित्रों,इस प्रतिपक्ष और सत्ता पक्ष के रूप में मत लीजिए । 40 साल का मेरा जीवन है, कोई उस पर ये अंगुली नही उठा सकता कि मैंने एक भी पैसे की गड़बड़ की हो, किसी के साथ अन्याय किया हो या पाप किया हो । आपकी कृपा से और जनता के आशीर्वाद से प्रधान मंत्री बन गया हूं लेकिन मुझे यह दृश्य देखना पड़ेगा । दो मूर्तियां है । सब पार्टियों से बडी दो मूर्तियां है । सबसे बडी दो पार्टियाँ और दो पार्टियों में दो बडी मूर्तियां – और दोनों आज अंधेरे में खड़े है, दोंनो आज लांछित होकर खड़े है । क्या यह स्थिति ऐसी नही है जिस पर हम लोग विचार करें ? चुनाव हो गए । परिणाम हमारे अनुकूल आए है इसलिए हमारा थोड़ा सा आनन्दित होना स्वाभाविक है मगर इस आनन्द के पीछे मन में ऐसा आक्रोश भरा हुआ है जिसको मैं व्यक्त नही कर सकता । मैं चाहता हूं कि इस आक्रोश में सब सहभागी बनें । चुनाव के बाद क्या वही काम फिर से होंगे ? क्या फिर पार्टी चलाने के लिए इसी तरह से पूंजिपतियों पर निर्भर रहा जाएगा ? क्या चुनाव लगातार खर्चीले होते जाएंगे ? यह देश कैसे चलेगा ? कौन सा आदर्श हम रखना चाहते है? किस आधार पर इस देश का भविष्य बनेगा ? दुनिया कहती है कि भारत आगे जा रहा है और इसमें कोई संदेह नही है लेकिन हम जानते है कि अंदर ही अंदर खोखला होता जा रहा है । यह एक चेतावनी है । ये दो कांड – जोगी कांड और जूदेव कांड – ये चेतावनियां है – लोकतंत्र के लिए, भारत के भविष्य के लिए । इसलिए मैं चाहता हूं कि सारे प्रकरण पर विचार करते हुए या चर्चा करते हुए इस पहलू को जरूर ध्यान में रखा जाए । बहुत बहुत धन्यवाद ।

श्री अर्जुन सिंह (मध्य प्रदेश) : माननीय सभापति महोदय, आदरणीय प्रधानमंत्री जी की वेदना और उनके उज्जवल राजनैतिक जीवन की पृष्ठभूमि में जो सवाल आज उनके सामने घूम रहे हैं, वे स्वाभाविक हैं और मैं इसके लिए उनका सम्मान करता हूं लेकिन मैं एक बात जरूर जानना चाहता हूं । चूंकि जूदेव से जोगी आ गये है, इसलिए दोनों मिल गए । केस अलग-अलग हैं, यह मैं भी जानता हूं । मैं यह जानना चाहता हूं कि समाचार पत्रों में जो बातें छपी थी कि जोगी के मामले में उप प्रधानमंत्री को जानकारी थी । कि यह सब क्या किया जा रहा है और न्याय मंत्री को भी इसकी जानकारी थी और इसीलिए शायद उसको अंतिम अनुदान देने के लिए वे रायपुर पधारे । मेरा सीधा सवाल है कि क्या आदरणीय प्रधान मंत्री जी को भी इसी प्रकार की जानकारी थी या नही थी, उनकी सहमति थी या नही थी, यह मेरा सवाल है ।

डा0 अबरार अहमद (राजस्थान) : सर, एक सवाल मेरा है ।

श्री सभापति : कोई सवाल नही ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : समाचारपत्रों में बहुत सी बातें छपती हैं और उनकी छानबीन कर लेना जरूरी है । यह कहना कि आडवाणी जी रायपुर गए थे **...(व्यवधान)...** या रायपुर बिना जाए हुए उन्होंने यहां से ऐसा षड़यंत्र गूंथा कि जिसमें जोगी जी फंस जाएं, इसमें सचाई नही है । सीबीआई अगर चाहे तो इस पहलू की भी जांच कर सकती है ।

डा0 अबरार अहमद : सर, मेरा एक सवाल है ।

श्री सभापति : कोई सवाल नही, कोई क्वेश्चन नही । Next. *...(Interruptions)...* No, no; I am not allowing you. *...(Interruptions)...*

डा0 अबरार अहमद : *

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record. *...(Interruptions)...*

डा0 अबरार अहमद : *

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record. ...(Interruptions)... Mr. Basu. ...(Interruptions)... मिस्टर बसु, आपका नही । यह इनका स्टेटमेंट है ।...(Interruptions)...

डा0 अबरार अहमद : *

DR. ARUN KUMAR SARMA: *

श्री सभापति : यह रिकार्ड पर नही जा रहा है ।मेरी बिना अनुमति के बोल रहे है कोई रिकार्ड पर नही जाएगा । **...(व्यवधान)...**

डा0 अबरार अहमद : *

श्री सभापति : कांग्रेस पार्टी के लीडर से मैं निवेदन करना चाहूंगा कि इनको बन्द करें । **...(व्यवधान)...** यह क्या तमाशा है ? आपकी यह कोई बात रिकार्ड पर नही है । **...(व्यवधान)...**

JUDGEMENT OF SUPREME COURT OF INDIA ABROGATING THEREBY THE RIGHT TO STRIKE BY EMPLOYEES AND WORKERS - Contd.

श्री नीलोत्पल बसु : सर, आप कुछ पूछ रहे थे । **...(व्यवधान)...**

श्री सभापति : स्ट्राइक के मामले में जैसा प्रधानमंत्री जी ने कहा, ये इसके ऊपर आज स्टेटमेंट दें या बाद में दें । **...(व्यवधान)...** मैं समझता कि सारे प्वाइंट्स कवर कर लेंगे तो ज्यादा अच्छा होगा कि बाद में स्टेटमेंट दें । **...(व्यवधान)...**

* Not Recorded.